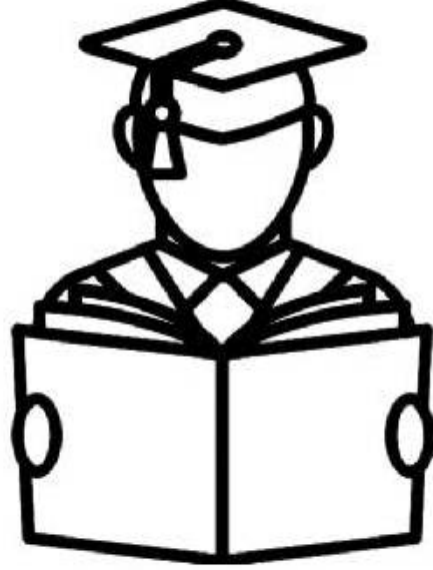


चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."



"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

दर्शन शास्त्र

कालक्रमानुसार विकास (chronological development)

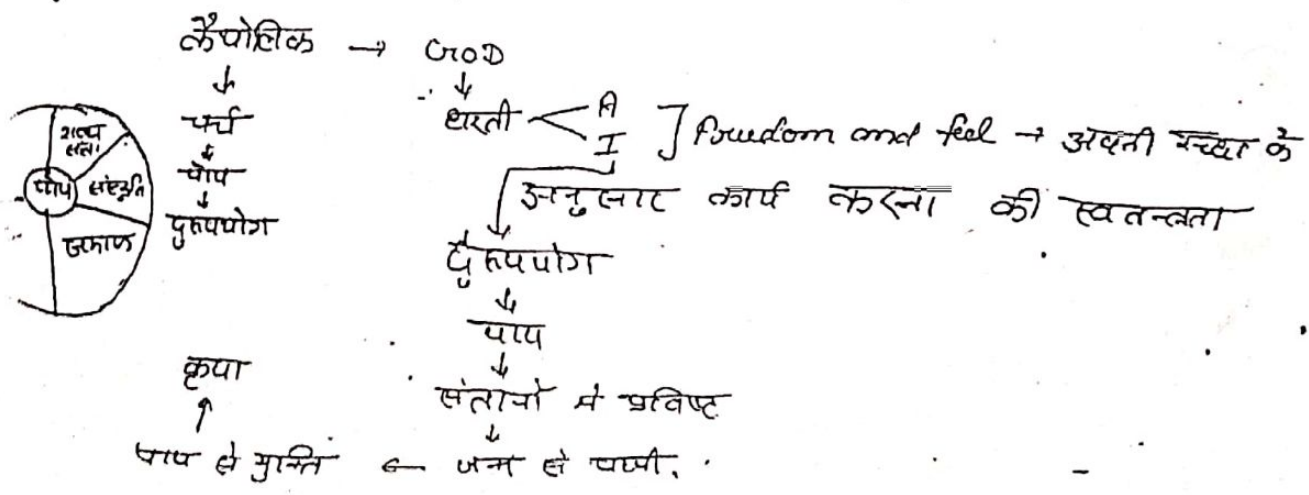
- 1) ग्रीक काल \rightarrow Plato Aristotle (600 B.C. - 400 A.D.)
- 2) मध्यकाल \times
- 3) आधुनिक काल (400 A.D. - 1500 A.D.)
- 4) समकालीन (1500 A.D. - 1900 A.D.) \rightarrow डेकार्त to Hegel.
- (1900 A.D. -) \rightarrow 6-11 topic

1) ग्रीक काल : पाश्चात्य दर्शन की शुरुआत ग्रीक दर्शन से होती है। प्रथम ग्रीक दर्शन पेलिज था जिसके अनुसार 'अल' ही परमत्व है।

ग्रीक दर्शन में प्लेटो को दर्शन में पहली बार दर्शन सुव्यवस्थित रूप में दिखायी देता है।

ग्रीक दर्शन में सुक्रात, प्लेटो, अरिस्तो का काल स्वर्ग युग के नाम से जाना जाता है।

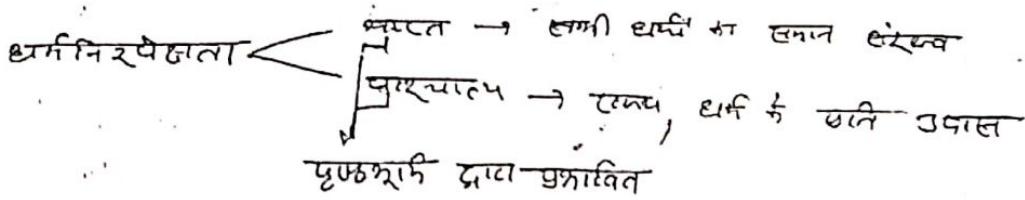
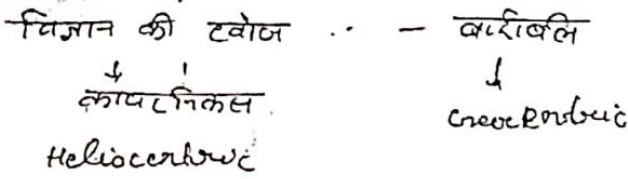
2) मध्य काल : धर्म गुण व धर्म ग्रन्थ सत्पत्ता के मानकों से। मध्य युग को अन्धकार युग कहा जाता है। यहाँ वैचारिक स्वतन्त्रता का अभाव था। कैथोलिक चर्च की प्रधानता थी। जीवन का प्रत्येक पक्ष चर्च के अनुसार अनुशासित होता है। योप को धरती का स्वर्ग का प्रतिनिधि माना जाता है।



11) आधुनिक दर्शन :

⇒ मार्टिन लूथर किंग के नेतृत्व धर्म सुधार आन्दोलन

धर्म राजसत्ता



- स्वतन्त्र चिंतन
- विज्ञान का प्रभाव
- धर्मगुरु एवं धर्म ग्रन्थ की बजाय अनुभव व बुद्धि के आधार पर सत्य का निरूपण
- उनास्था व विश्वास के बजाय संशय द्वारा जाना गति का प्रयास
- आधुनिक दर्शन के अन्तर्गत इसे डेकार्टे से लेकर हीगल तक का आरण्यन करना है

12) समकालीन पश्चात्प दर्शन : 19 शताब्दी के बाद का दर्शन

मूल एवं रसेल से लेकर ह्यूमन तक आरण्यन करना है

ਪ੍ਰੀਤ ਨਗਰ ਦੇ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ।

ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ।

ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਇਹਨਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ 'ਤੇ ਕਾਮਰਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ।

नहीं हैं अतः प्राथमिक गुणों के आधार के रूप में
वस्तु की सत्ता को मानने का कोई उचित नहीं है
पहा बर्कले यह कहते हैं कि पहले हम धूल उड़ते हैं
और बाद में यह कहते हैं कि हमें कुछ दिखाना
नहीं देता।

② प्रत्यक्ष नहीं : बर्कले के अनुसार वस्तु की स्वतन्त्र सत्ता
हमें कभी प्रत्यक्ष नहीं होता अतः उसकी सत्ता को
स्वीकार नहीं किया जा सकता।

③ अनुमान से भी नहीं : अनुमान से भी बाह्य वस्तु की सत्ता
का ज्ञान नहीं किया जा सकता। अनुमान के लिए भी
सर्वप्रथम प्रत्यक्ष का होना आवश्यक है। प्रत्यक्ष से केवल
प्रत्यक्ष मिलते हैं ये प्रत्यक्ष मानसिक हैं अतः इन मानसिक
प्रत्यक्षों के आधार पर बाह्य शारीरिक वस्तु की सत्ता को
अनुमानित नहीं किया जा सकता।

④ कारण-कार्य सम्बन्ध : लॉक ने अज्ञानों को प्राथमिक
गुणों का कारण माना था। इस प्रकार के कारणता
सिद्धान्त के आधार पर शारीरिक पदार्थ की सत्ता को
स्वीकार करते हैं। - बर्कले के अनुसार शारीरिक पदार्थ

प्रत्ययों का कारण नहीं हो सकते क्योंकि श्रौतिक
 सत्य विच्छिन्न व अज्ञ ही कोई सक्रिय सत्ता ही
 प्रत्ययों का कारण हो सकती है जो कि चेतन हो।
 यहाँ चेतनत्व के रूप में आत्मा एवं ईश्वर की
 स्थिति को स्वीकार किया गया है। अर्थात् ईश्वर
 ईश्वर ही प्रत्ययों का मूलकारण एवं आधार है।

② अनात्मता दोष: यदि प्रत्ययों के कारण के रूप में अज्ञ
 का ही हस्तक ही अस्वीमानित किया गया तो फिर
 अज्ञ का ही श्रौतिक पदार्थ के रूप में किसी अन्य की सत्ता
 की अनुमानित करना होगा और इस प्रकार यहाँ अनात्मता
 दोष की उत्पत्ति हो जाती है।

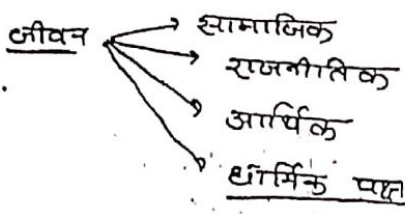
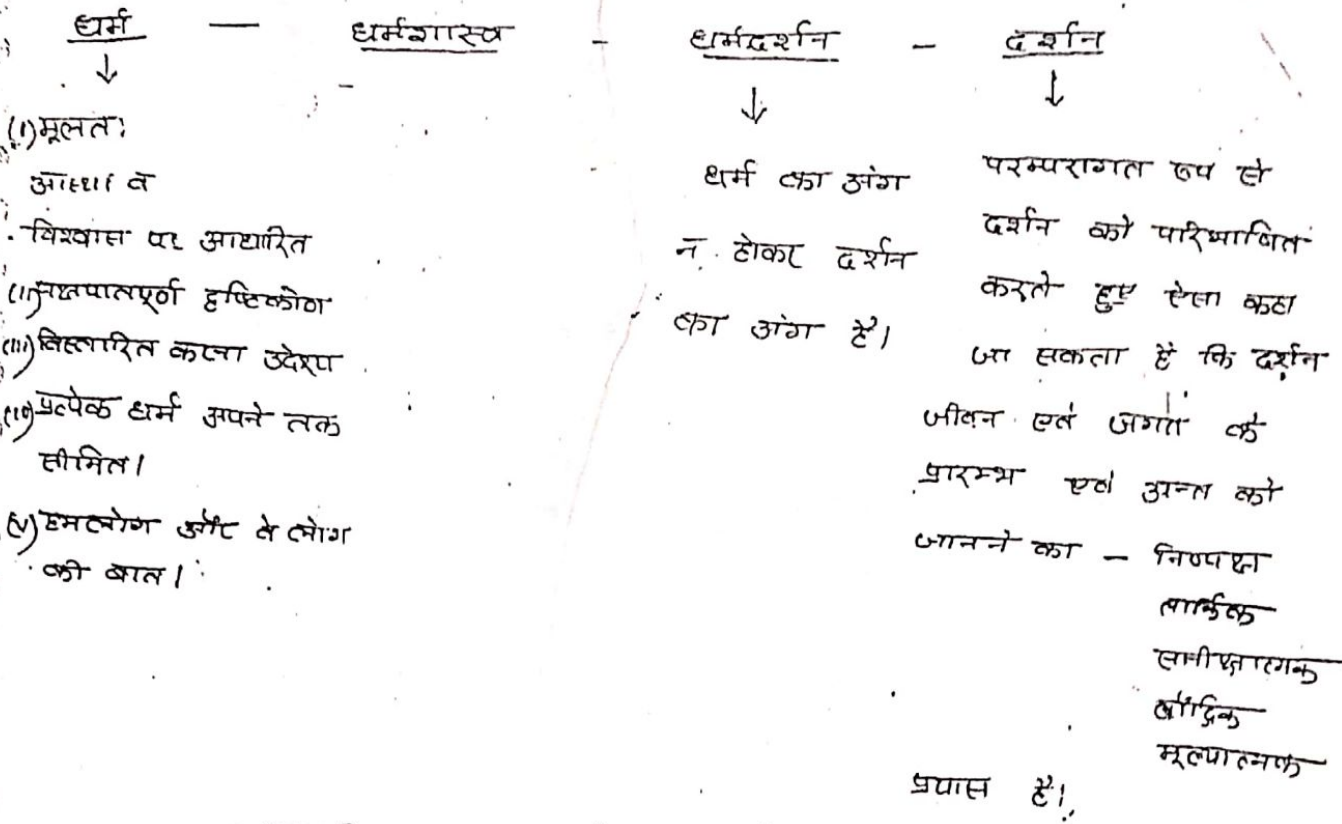
अर्थ प्रत्ययों का खण्डन : श्रौतिकतावाद का खण्डन एवं
 अहमात्मवाद की स्थापना हेतु
 अर्थात् आत्म द्वारा समर्थित अर्थ प्रत्ययों की अवधारणा का
 खण्डन करते हैं उल्लेखनीय है कि आत्म के अर्थ प्रत्ययों को
 मूलकर अज्ञ द्वेष की सत्ता को स्वीकार किया जा (आत्म
 यद्यपि अज्ञान प्रत्ययों का खण्डन करते हैं परन्तु वे
 अर्थ प्रत्ययों की सत्ता को स्वीकार करते हैं अर्थात्

अनुसार अमूर्त प्रत्ययों का मानव चित्त में महत्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण मनुष्य पशु से अग्रेष्ठ प्राणी के रूप में स्थापित होता है।

क्या है ? किसी भी सामान्य या जाति के विचार को जो सम्पूर्ण वर्ग विशेष का सार है उसे अमूर्त प्रत्यय कहते हैं। जैसे - मनुष्यत्व, गोल आदि। यह बात का यह कहना है कि अनुभव के माध्यम से हमें गुण प्राप्त होते हैं परन्तु इन गुणों के आशय के रूप में जड़द्रव्य को मानना आवश्यक है। इस प्रकार जड़द्रव्यों की स्थिति एक प्रकार से अमूर्त प्रत्ययों की स्वीकृति का परिणाम है।

बर्कले के अनुसार अमूर्त प्रत्यय असम्भव है हमारे मन में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो विशेषों को ग्रहण कर सामान्य का निर्माण करे। बर्कले के अनुसार सभी प्रत्यय विशेष एवं अमूर्त ही होते हैं हमें अनुभव से विशेषों का ही ज्ञान प्राप्त होता है जैसे हम जब भी किसी मनुष्य की कल्पना करेंगे तो फिर उसमें कुछ न कुछ विशेषता अवश्य पायेंगे।

Philosophy of Religion



धार्मिक पक्ष : धार्मिक जीवन के विभिन्न पक्षों का दार्शनिक

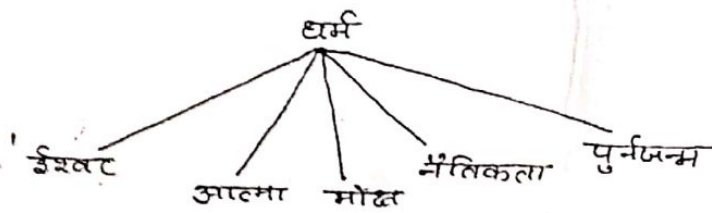
अध्ययन धर्म दर्शन है।

Philosophical attitude : निष्पक्ष, बौद्धिक, रचनात्मक, समीक्षात्मक
मूल्यात्मक।

* धर्म न तो धर्म है न ही दर्शन है।

⇒ दर्शन की विषय वस्तु व्यापक → धर्मदर्शन सीमित।

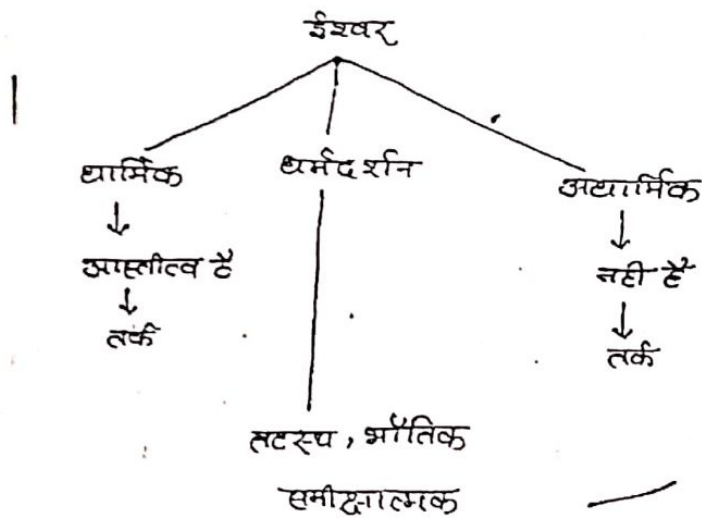
* धर्म के विभिन्न पक्ष :



⇒ धर्मदर्शन का दृष्टिकोण अधार्मिक दृष्टिकोण नहीं है। - यह एक तटस्थ दृष्टिकोण है।

↳ अन्ततः मूलत्व $\left\langle \begin{matrix} \text{पक्ष} \\ \text{विपक्ष} \end{matrix} \right\rangle$ दोनों का मूल्यांकन

ईश्वर :



सापेक्ष : देश-काल, परिस्थिति पर निर्भरता

निःसापेक्ष : देश-काल, परिस्थिति पर निर्भरता नहीं

सीमित : परिमित (finite) : स्थान व काल से आबद्ध

असीमित (अपरिमित) : स्थान व काल में आबद्धता नहीं!

सामर्थ्य : ज उद्योग \rightarrow समय की परिधिमा से घटे

सामर्थ्य : समय की सतता से आसत /

सत् : तत्त्व के सन्तर्षी \rightarrow Real entities

सत्त्व : सामर्थ्यमांसीय सन्तर्षी \rightarrow विधाट आदि आर्थीक सत्ताओं के सन्तर्षी में

आर्थीकिक : आर्थीकिक : जो इन्द्रियों की परिधिमा से आसत किया जा सके /

आर्थीकिक : पारथीकिक : इन्द्रियों की परिधिमा से घटे /

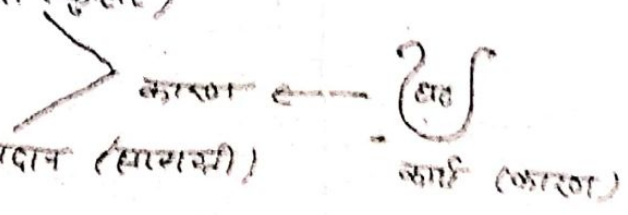
\rightarrow विषय, अनुभवमातीत सत्ता \rightarrow ईश्वर

निमित्त कारण : निमित्त कारण वह है जो उपादान कारण में वाली एवं उपवस्था उपपन्न का कार्य को निमित्त करता है। इह के निर्माण के क्रम में कुहाट निमित्त कारण है। निमित्त कारण कार्य से बाहर रहता है।

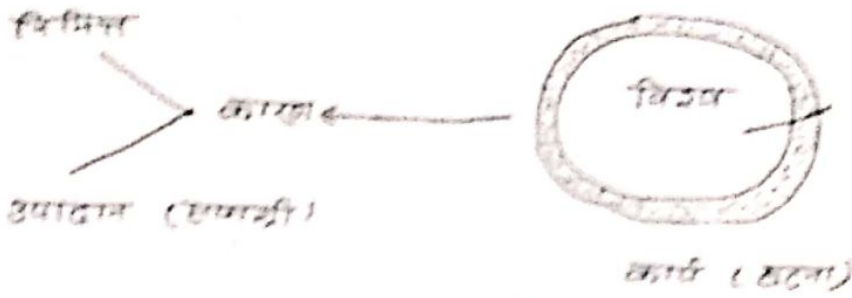
उपादान कारण : उपादान कारण वह सामर्थी है जिसके कार्य का निर्माण किया जाता है। जैसे वह के निर्माण के क्रम में गिट्टी उपादान कारण है। उपादान कारण कार्य में विह्वल हो जाता है।

कारणात्ता विज्ञान्त : प्रत्येक कार्य का कार्य न कार्य कारण अवश्य होता है।

निमित्त (कुहाट)



Transcendent → Immanents
 अतींद्रिय → अंतर्गत



ईश्वर

- विशेष : विश्वव्यापीत → अनुभवव्यापीत
- उपादान : विश्वव्यापी → अंतर्गत
- विशेष व उपादान : विश्वव्यापीत व विश्वव्यापी दोनों → मन्त्री के जाले की शक्ति
- अनुभवव्यापीत व अंतर्गत दोनों।

विश्वव्यापी : पाप-पुण्य की उपधारणा पर जोर
 ईश्वर विनाशी व विकारी
 लक्ष्य की समझ
 उपादान का अंतर्गत पर प्रवर्धित

विश्वव्यापीत : उपादान के अंतर्गत पर प्रवर्धित

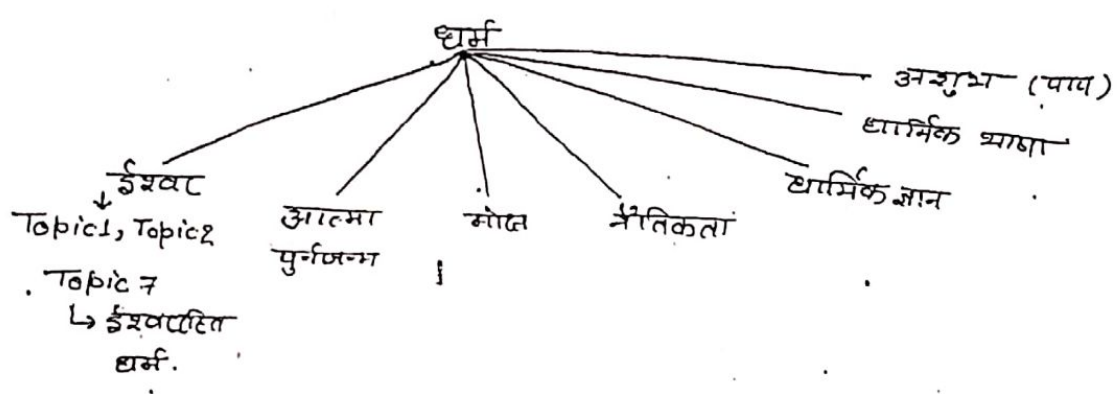
ईश्वरता: एक या सम्पदा : जगत को बनाए और बहाए है
 जगत् → जगत् जगत में समझ
 → ईश्वर का जगत
 या ईश्वर की शक्ति

महाभूतक धर्म, वैश्विक धर्म : विश्वकी स्थापना ईश्वर के इशारे

* धर्म दर्शन में हमें ईसाई व हिंदू अवधारणा का प्रभावित; अध्ययन करना है।

व्यापक विद्या : धर्म दर्शन व्यापक हो सकता है।

* धर्म दर्शन का क्षेत्र : सभी टॉपिक का अध्ययन



Topic 3

अशुभ : जी नैतिक दृष्टिकोण से नहीं होना चाहिए /

↳ पाप

जगत की रचना → ईश्वर

जगत की समस्या

→ जानबूझकर → दयालु नहीं
 → असमर्थ → सर्वशक्तिमान नहीं

Topic 4

अमरता : नित्य, शाश्वत, अपरिवर्तनशील

अपरिवर्तनशील : पुनः-पुनः जन्म धारण करना /

जीवन से दुखों की समाप्ति → मोक्ष

कर्म नियम

अच्छा कर्म - अच्छा फल
 बुरा कर्म - बुरा फल

⇒ कर्मनिपम , कारणता सिद्धान्त का प्रतिक क्षेत्र में प्रयोग है

कारणता सिद्धान्त : कारण व कार्य में कुछ समरूपता
(तिल से ही तेल)

उच्छा फल → अच्छे कर्म

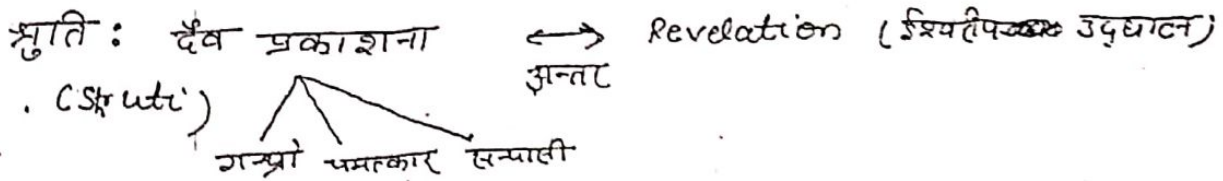
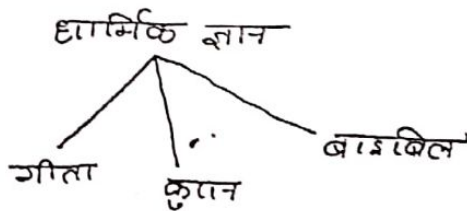
कर्म निपम → आत्मा की उमरता
पुनर्जन्म
मोक्ष

वेदों के स्तर पर जीवन का परम लक्ष्य → स्वर्ग

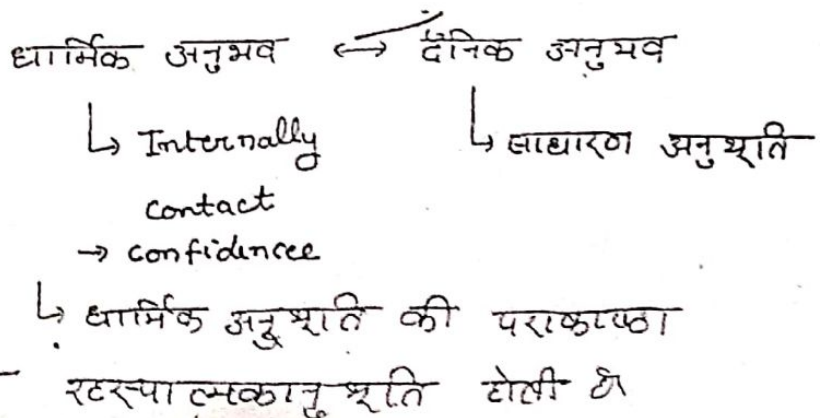
दर्शन के स्तर पर जीवन का परम लक्ष्य → मोक्ष

! ज्ञान वेदान्त के स्तर पर परम लक्ष्य → मानव कल्याण

⇒ Topic 5 :



⇒ Topic : 6 :



Topic: 5: राजनैतिक विचारधाराएँ : अराजकतावाद, मार्क्सवाद एवं समाजवाद

पूजीवाद	समाजवाद	मार्क्सवाद
→ साधनों के उपयोग की स्वतन्त्रता	→ समानता पर विशेष जोर	→ योग्यता के अनुसार काम; आवश्यकता के अनुसार मजदूरी

समाजवाद (socialism): वह आर्थिक और राजनीतिक सिद्धान्त जिसके अनुसार समाज में उत्पादन, वितरण और वितरण के प्रमुख साधनों पर सर्वजनिक स्वामित्व और नियंत्रण स्थापित होना चाहिए ताकि सरकार ऐसी नीतियां बना सके जिनसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर विकास का समुचित अवसर मिल सके।

साम्यवाद (Communism): इस विचारधारा के अनुसार एक ऐसी समाज-व्यवस्था का स्थापना होना चाहिए जिसमें निजी संपत्ति (Private Property) का कोई स्थान नहीं होगा, वर्गों का मिट जायगा, और प्रायः सभी पुरानी संस्थाएँ और मान्यताएँ समाप्त होनी-चाहिए। यह समाजवाद की उच्चतम अवस्था को व्यक्त करता है।

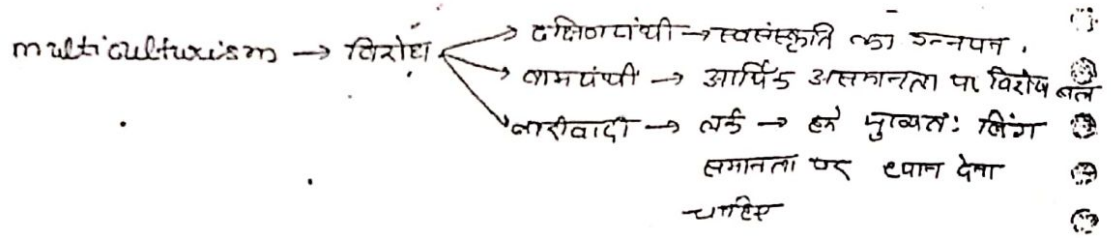
मार्क्सवाद (Marxism): • मार्क्सवाद वह सिद्धान्त है जिसके अन्तर्गत मानव-समाज की समस्याओं को इतिहास के माध्यम से समझने का प्रयत्न किया जाता है। उर्ध्व इतिहास को परस्पर-विरोधी शक्तियों और वर्गों के संघर्षों की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यह समाज को पूँजीपति वर्ग तथा मजदूर वर्ग दो भागों में बाँटता है तथा यह अपेक्षा करता है कि गरीबी एवं मुक्ति तथा ~~समानता~~ समानता की स्थापना के लिए मजदूर वर्ग को पूँजीपति वर्ग के विरुद्ध संगठित होना होगा।

अराजकतावाद (Anarchism): यह सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी भी प्रकार सरकार आवश्यक या अनिवार्य है उसमें सारा...

ये तर्क दिया जाता है कि मनुष्य मूलतः विवेकशील, निष्कपट और व्यापकरण प्राणी है। अतः यदि समाज सही ढंग से जगंधित हो तो किसी प्रकार के बल-प्रयोग की जरूरत नहीं होगी।

Topic: 6 : मानववाद , धर्मनिरपेक्षतावाद , बहुसंस्कृतिवाद - आदर्शरूप .

⇒ ये तीनों सिद्धान्त JEL की स्थापना के लिए आवश्यक हैं परन्तु इसमें बहुसंस्कृतिवाद एक विवादित सिद्धान्त है।



Topic: 8 : विकास एवं सामाजिक उन्नति .

↳ All around sustainable development

- ✓ प्रगति → उन्नत गति
- × अधोगति

Topic: 9 : लिंग भेद : उसका तात्पर्य जैविकीय भेद से न होकर बालक सामाजिक व सांस्कृतिक जायात पर लक्ष्यों के साथ किए जाने वाले भेद से है .

Topic: 10 : जाति भेद : गाँधी एवं अंबेडकर

गाँधी
↓
वर्ण व्यवस्था में विकृति के कारण जाति व्यवस्था

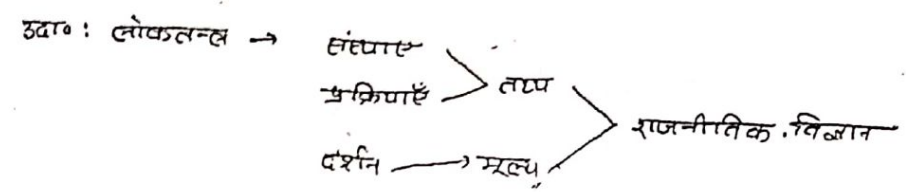
अंबेडकर
↓
जाति भेद , वर्ण व्यवस्था की सामाज्य परिणामी है वर्ण व्यवस्था को ही हटाओ।

राज० सिद्धान्त

राज० दर्शन

तर्क → is
 मूल्य → ought to

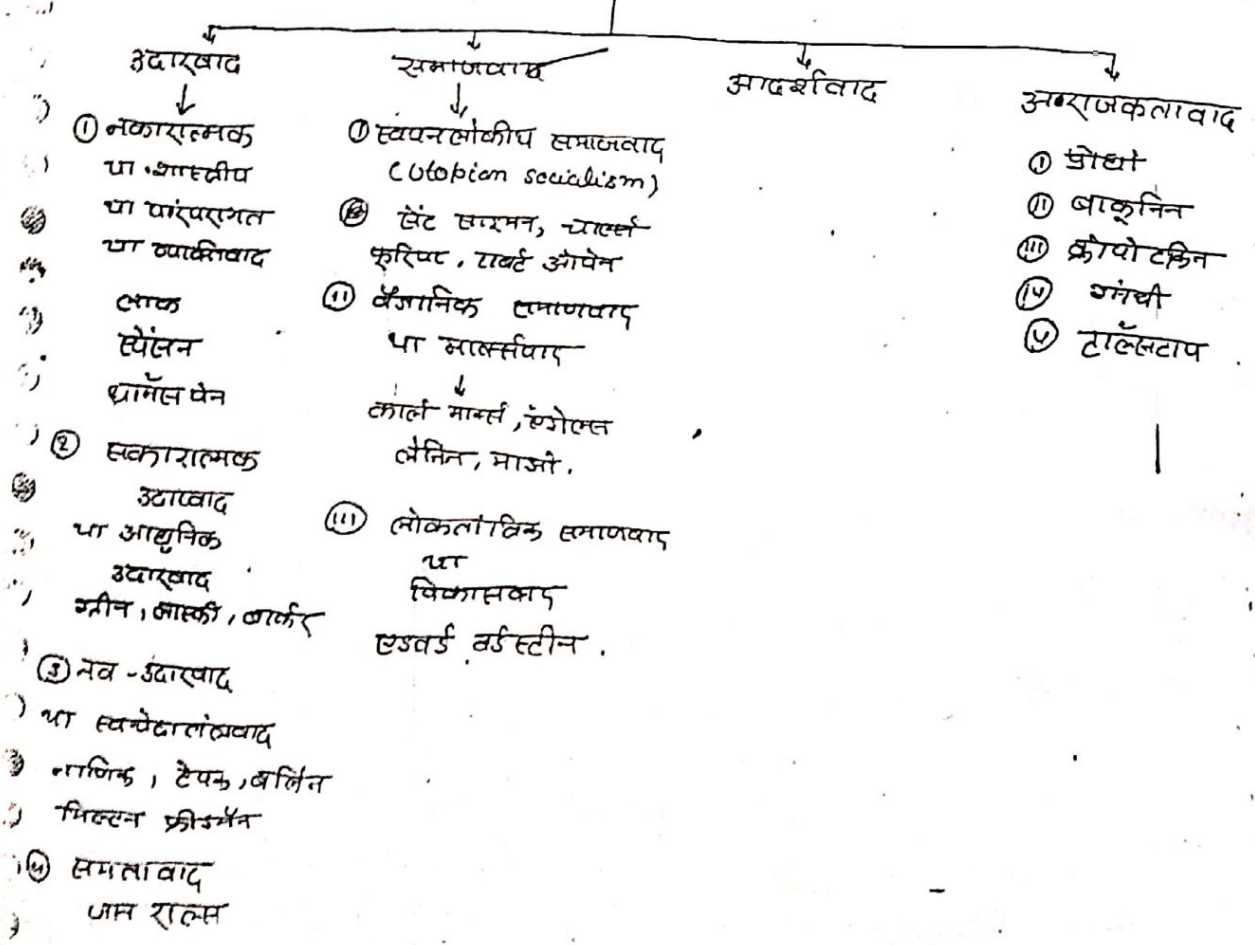
↓
 मूल्यात्मक विवेचन
 ↓
 क्या होना चाहिए
 ↓
 उमूर्तता → concept



लोकतन्त्र - लोकतन्त्र सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है या नहीं? → राज० दर्शन
 दर्शन → स्वतन्त्रता → मुक्ति (Liberty)

Imp Definition :

प्रमुख विचारधाराएँ



उदारवाद :

- ① पूर्णस्वाध का समर्पण करता है।
- ② निजी सम्पत्ति का समर्पण करता है।
- ③ व्याक्ति केन्द्रित दर्शन है। → व्याक्ति ही सत्य है।
- ④ इसका केन्द्रिय मूल्य स्वतन्त्रता है।
- ⑤ यह संविधानवाद में विश्वास रखता है। → सीमित शासन
- ⑥ व्याक्ति को तार्किक प्राणी (विवेकशील प्राणी) मानता है। → समाज व राज्य व्याक्ति में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

नकारात्मक उदारवाद : ① यह 'सीमित राज्य' या 'पुलिस राज्य' में विश्वास करता है। सीमित राज्य का अर्थ है कि ऐसा राज्य जो केवल विधि व्यवस्था बनाये रखने का काम करे। शक्ति को पुलिस राज्य भी कहते हैं।

राज्य $\begin{cases} \text{कानून} \checkmark \\ \text{व्यवस्था} \times \end{cases}$

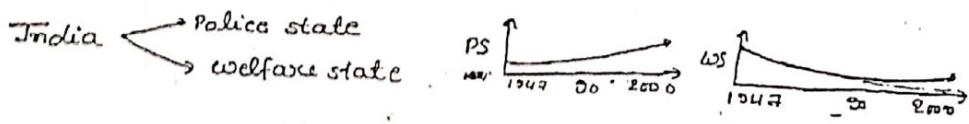
① नकारात्मक उदारवाद अर्थव्यवस्था में राज्य को अहस्तक्षेप का समर्पण करते हैं अतः वे 'अहस्तक्षेप की नीति' को समर्थक हैं।

② नकारात्मक उदारवाद 'अणुवादी व्याक्ति' (Atomised individual) का समर्थक है। इसका अर्थ है अणु की भांति व्याक्ति का स्वतन्त्र अस्तित्व है। वह राज्य, या समाज पर निर्भर नहीं है।

③ नकारात्मक उदारवाद 'नकारात्मक स्वतन्त्रता' को विचार की समर्थक है। नकारात्मक स्वतन्त्रता का अर्थ है व्याक्ति के जीवन में व्यक्तियों का आभाव होना।

सकारात्मक उदारवाद : ① यह 'कल्याणकारी राज्य' का समर्थन करता है।

कल्याणकारी राज्य का अर्थ है ऐसा राज्य जो जनता के सभी वर्गों और विशेषकर पिछड़े वर्गों के उत्थान का कार्य करता है। कल्याणकारी राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि क्षेत्र में राज्य की सक्रिय भूमिका को स्वीकार करता है।



① सकारात्मक उदारवाद निजी सम्पत्ति को स्वीकार करते हुए अर्थव्यवस्था में राज्य के हस्तक्षेप का समर्थन करता है।

② सकारात्मक उदारवाद की व्याप्ति को समाज से अधिक महत्व देता है लेकिन यह व्यक्ति के हित व समाज के हित को परस्पर पूरक मानता है।

③ सकारात्मक उदारवाद 'सकारात्मक स्वतन्त्रता' का समर्थन करता है। सकारात्मक स्वतन्त्रता का अर्थ है व्यक्तित्व के विकास के अवसरों का होना। इसके लिए राज्य के कुछ बंधनों को स्वीकार किया जा सकता है।

⇒ स्वतंत्रता के लिए बंधन आवश्यक हैं। उदा बंधन का तार्किक होना आवश्यक है। जैसे → शिक्षा का अनिवार्यता।

④ सकारात्मक उदारवादी स्वतन्त्रता एवं समानता को परस्पर पूरक मानते हैं।

नव-उदारवाद : नव उदारवाद 91 वीं शताब्दी में सकारात्मक उदारवादी विचारों का पुनर्जीवन है।

① यह स्वयत्त बजार व्यवस्था में विश्वास रखता है।

② वे राज्य की सीमित भूमिका को मानते हैं।

③ नाजिक ने इस सम्बन्ध में 'संविधानात्मक प्रवृत्ति' का

का विचार दिया है अर्थात् राज्य केवल विधि व्यवस्था को बनाये रखने का कार्य करे। नाजिक ने 'सीमित लेकिन मजबूत राज्य' (minimal but strong state) का विचार भी दिया है।

⑩ नवउदारवाद स्वतन्त्रता व समानता को पर्याप्त विरोधी मानता है। वे केवल कानूनी समानता के समर्थक हैं। सामाजिक आर्थिक समानता के विरोधी हैं। अतः सामाजिक आर्थिक समानता स्थापित करने के विभिन्न उपाय जैसे वंचित वर्गों के लिए विशेष योजनाओं का वे विरोध करते हैं।

⑪ नव उदारवादी श्रमणलीकरण के समर्थक हैं।

समतावाद : (Equalitarianism)

① यह निजी संपत्ति और बाजार व्यवस्था में विश्वास श्रवता है लेकिन बाजार को नियंत्रित करना चाहता है।

② यह कल्याणकारी राज्य का समर्थन करता है।

③ समतावाद स्वतन्त्रता को महत्व देते हुए भी समानता लाने पर बल देता है।

⇒ समकालीन संबंध → नव उदारवाद ↔ समतावाद
राजनीतिक कारक प्रबल → उकारणक व सकारात्मक उदारवाद के संबंध में
आर्थिक कारक प्रबल → नवउदारवाद व समतावाद के संबंध में

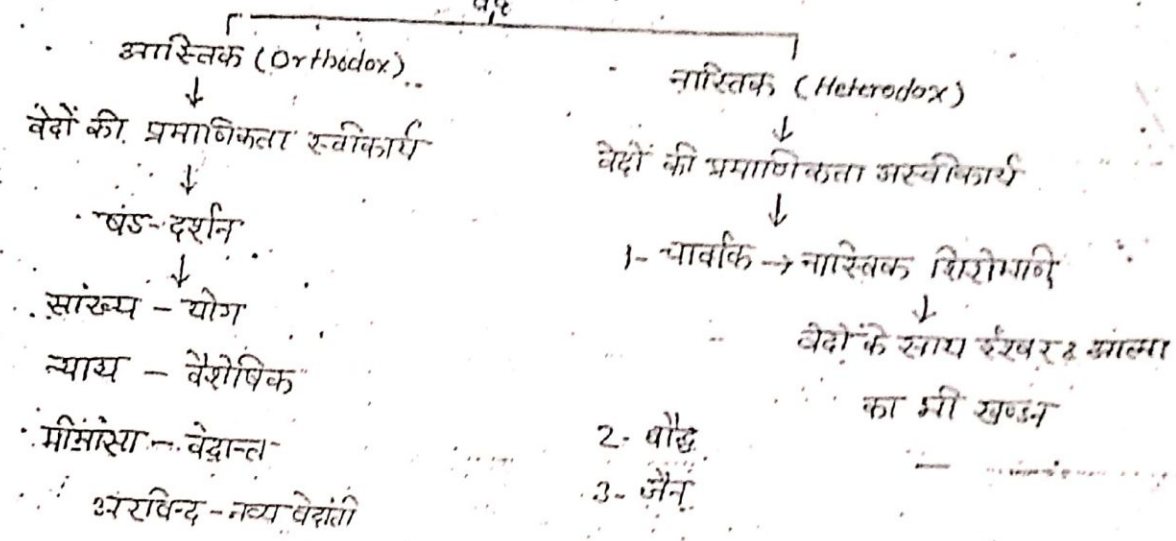
(2)

Philosophy

9R

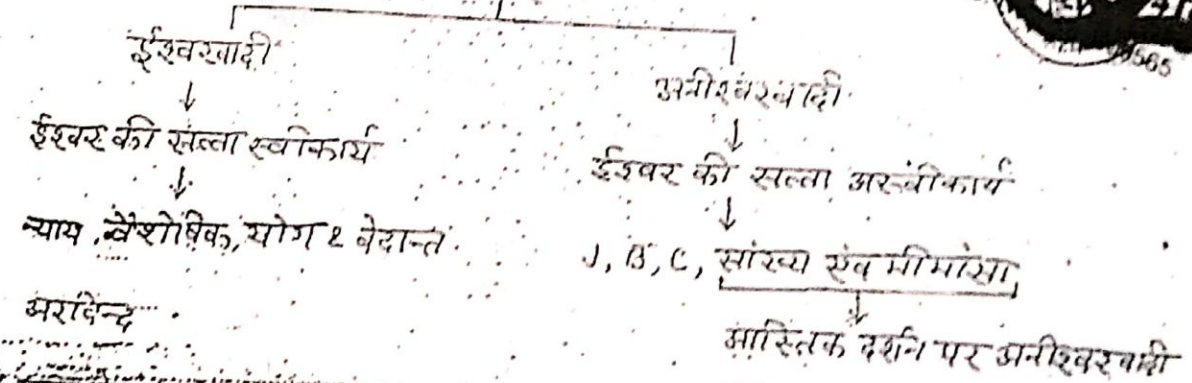
भारतीय दर्शन

↓
वेद



भारतीय दर्शन

↓
ईश्वर



नव्य वेदांत

वेदांत की व्यापारिक & सुगमकृत व्याख्या ही नव्य वेदांत है।

कर्म नियम / कर्मवाद

कर्म नियम के अनुसार उनके कर्म का अच्छा फल & पुरे कर्म का बुरा फल अक्षर्य प्राप्त होता है।

कारणता सिद्धांत / कार्य-कारण

इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक कार्य का कोई न

कोई कारण अवश्य होता है।

ज्ञान मीमांसा-

यह दर्शन शास्त्र की एक प्रमुख शाखा है जिसमें ज्ञान के वास्तविक स्वरूप, ज्ञान की सीमा, ज्ञान की प्रमाणात्मकता, साता-संघ-संबंध आदि की विवेचना की जाती है।

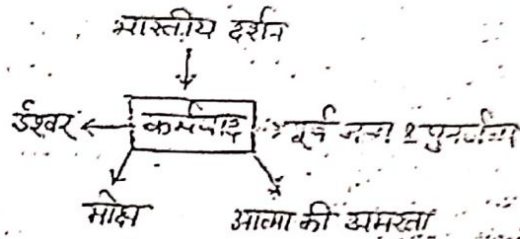
तत्त्व मीमांसा-

यह दर्शन की एक प्रमुख शाखा है जिसमें मूल तत्व की संख्या (एकतत्त्ववाद, द्वैतवाद, बहुतत्त्ववाद), मूल तत्व के स्वरूप (मीमांसकवाद, अष्टात्मवाद, द्वैतवाद) आदि की विवेचना की जाती है, इसके अलावा अज्ञान, पदार्थ, द्रव्य, ईश्वर, आत्मा, जगत के मूल तत्व, प्रकृति-सृष्टि आदि की विवेचना की जाती है।

तत्व मीमांसा → प्रधान दर्शन → वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त।

ज्ञान मीमांसा → प्रधान दर्शन → श्याय, मीमांसा।

द्वैत मीमांसा → प्रधान दर्शन → चावक, जैन, बौद्ध।



9- भारतीय दर्शन यह मानता है कि जीवन एक रंगमंच की भाँति है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रस्तुति देनी है।

10- भारतीय दर्शन जीवन को अनिच्छता से संबंधित है। यहाँ प्रत्येक भारतीय दर्शन जीवन जीने की एक विशेष पद्धति बताता है जिसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जा सकता है & अंततः जीवन से दुःखों को दूर किया जा सकता है।

11- भारतीय दर्शन का विकास द्वैतित्व रूप से / समानान्तर रूप से हुआ है, दूसरी ओर पश्चात्य दर्शन का विकास लक्ष्यत हुआ है।

12- भारतीय दर्शन का विकास खंडन-मंडन प्रक्रिया के तहत हुआ है।

भारतीय दर्शन पर आक्षेप -

1- निराशावादी

2- पलायनवादी

आरम्भ के दृष्टिकोण से या सीमित दृष्टिकोण से हम भारतीय दर्शन को निराशावादी कह सकते हैं क्योंकि यह जीवन में दुःखों को देखता है, परन्तु अपनी पूर्णता / चरम परिणाम में भारतीय दर्शन को निराशावादी कहना ठीक नहीं है। अपनी पूर्णता में यह आशावादी है क्योंकि प्रत्येक I.P. में दुःखों को दूर करने के उपाय बताये गये हैं। (4 मार्च सत्र 2018)

विभिन्न भारतीय दर्शनों में प्रायः इस लौकिक जीवन को कम महत्व दिया गया है, जगत में आसक्ति के परित्याग की बात कही गई है तथा इसी ^{संदर्भ} में भारतीय दर्शन के पलायनवादी होने का आरोप लगा जाता है। परन्तु इसे पूर्णतः स्वीकार नहीं किया जा सकता, वीचिह्लव, स्थिर प्रस 2 विभिन्न दर्शनों में बालीन जीवन मुक्ति की अवधारणा इस जगत में



भारतीय दर्शन की मूलमूल विशेषताएं-

1- कर्म नियम में विश्वास-

चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय दर्शन कर्म नियम में विश्वास करते हैं। इसके अनुसार अच्छे कर्मों का अच्छा फल तथा बुरे कर्मों का बुरा फल कर्ता को अवश्य मिलता है।

2- विचारों की स्वतंत्रता-

विभिन्न भारतीय दर्शनों (10) का विकास बिना किसी दबाव के स्वतंत्र रूप से हुआ है। विभिन्न विरोधी विचार धाराओं की उपस्थिति इसकी पुष्टि करती है।

3- मोक्ष जीवन का चरम लक्ष्य-

चार्वाक दर्शन को छोड़कर समस्त I.P. मोक्ष को चरम अध्यात्मिक लक्ष्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

4- नित्य आत्मा में विश्वास-

चार्वाक & बौद्ध को छोड़कर समस्त भारतीय दर्शन आत्मा में विश्वास करते हैं।

5- दुःख का कारण अज्ञान/अविद्या है-

समस्त दर्शन द्वारा स्वीकार्य।

6- नैतिकता का महत्व-

समस्त I.P. जीवन में नैतिकता के महत्व को प्रती-स्थापित करते हैं। अपवाद- निवृत्त चार्वाक।

7- पुनर्जन्म & पुनर्जन्म में विश्वास-

अपवाद- चार्वाक

8- भारतीय दर्शन में दर्शन & कर्म में समन्वय दिखता है; जैसे जैन दर्शन में हैं & प्रमत्त भी है।

रह कर ही औरों के जीवन की ओर अधिक आनंदपूर्ण बनाने की बात करता है। अतः इस पर पलायनवादी होने का आरोप पूर्णतः सत्य नहीं है।

- * जीवन में मुक्ति → सदेह मुक्ति
- * मृत्यु के बाद मुक्ति → विदेह मुक्ति
- * स्थिति प्रज्ञा → गीता → सुख दुःख से परेह



चार्वाक-दर्शन

चार्वाक शब्द का अर्थ - विभिन्न मत हैं -

- 1- चारु + वाक = सुंदर वचन
- 2- चार्वाक नामक ऋषि द्वारा प्रतिपादित होने के कारण।
- 3- चार्वाक चर्म धानु से बना है जिसका अर्थ है - 'चर्मना'। यह सभी वर्णों वालों / नैतिक मूल्यों को चर्बा जाता है।
- 4- बृहस्पति द्वारा स्थापित दर्शन। कुशाक्षर सभाग में अश्वमेधी की कर्मजोड़ करने के लिए प्रतिपादित किया था।

पाठ्यक्रम -

(i) ज्ञान का सिद्धान्त या ज्ञान सीमाशा

(ii) अतीन्द्रिय सत्ताओं का निराकारण

अनुभववादी / प्रत्यक्षवादी / इन्द्रियवादी (Empiricist)

वस्तु

⇒ प्रमाणा → प्रमाण → प्रमेय → प्रमाणा

↓ ↓ ↓ ↓

समर्थन माध्यम प्रमाण प्रमाणा

अनुभव

यथा + अर्थ ⇒ के अनुसार + वस्तु ⇒ वस्तु के अनुसार अनुभव ⇒ नैतिक वस्तु

वैसा अनुभव

⇒ प्रमाणा → समर्थन अनुभव → वस्तु के विरोधी ज्ञान → वस्तु को ही अनुभवना।

* ज्ञान की प्राप्ति का साधन - प्रमाण के बिना ज्ञान प्राप्ति का साधन।

⇒ प्रमाण के रूप हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अनुमान, अनुभव, अनुभव।

* प्रमेय - प्रमाणों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त है।

* प्रमाणा - प्रमेय को ही प्रमाणा है। (जाना)

प्रमाणों के संदर्भ में भावुकिय दर्शन